# गोनू झा के किस्से

तारानन्द वियोगी

*नवसाक्षर साहित्यमाला*

# गोनू झा के किस्से

## तारानन्द वियोगी

चित्रांकन

**सुभाष राय**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

गोनू झा का जन्म कोई तीन सौ साल पहले दरभंगा के पास हुआ था। उन्होंने बड़ा नाम कमाया। आज भी उस क्षेत्र के चतुर और हाजिर जवाब लोगों को गोनू झा कहकर पुकारते हैं।

बचपन से ही गोनू बड़े समझदार थे। कहते हैं कि बुद्धि का वरदान उन्हें देवी दुर्गा से मिला था।

एक बार की बात है। दुर्गा पूजा का समय था। देवी की मूर्ति बड़ी ही सुंदर बनी थी। लोगों की भीड़

दर्शन के लिए आ-जा रही थी। उसी समय बालक गोनू पहुंचा। उसने देखा—देवी के आठ हाथ थे। हरेक हाथ में कोई न कोई हथियार था। उनका कोई हाथ खाली न था।

यह दृश्य देखकर गोनू जोर-जोर से देवी से कहने लगा—हे देवी, तुम्हारा यह रूप मुझे अच्छा नहीं लगता। तुम तो सबकी माता हो। सबकी मनोकामना पूरी करती हो। तुम्हारा एक भी हाथ खाली नहीं है। मैं तो बच्चा हूं। अभी अगर मैं तुमसे प्रसाद मांगूं तो किस हाथ से दोगी? हे माता, तुम्हें अपना एक हाथ खाली रखना चाहिए।

कहा जाता है कि इस बात पर देवी हंसने लगीं। उन्होंने गोनू को वरदान दिया—बेटे, तर्क करने में कोई तुम्हें हरा न सकेगा।

जब बड़े हुए तो गोनू झा एक बार बैल खरीदने के लिए हाट गए। हाट उनके घर से दो कोस पर थी। बैल खरीदकर गोनू लौट रहे थे। रास्ते में उन्हें तरह-तरह के लोग मिले। सभी ने बैल के बारे में पूछा—

—गोनू बाबू, हाट गए थे?

—हां।

—ये बैल खरीदे हैं?

—हां।

—दोनों बैल खरीदे हैं?

—हां।

—आज ही खरीदे हैं?

—हां।

—कितने में खरीदे?

—पचास में।

गोनू झा आगे बढ़े। फिर एक आदमी मिला। अब उसने भी पूछताछ शुरू की—सारे के सारे वे ही सवाल करते।

—कितने में खरीदे?

—पचास में।

कोस भर चलते-चलते गोनू झा इस सवाल-जवाब से परेशान हो गए। सोचा, अभी तो वे गांव से बाहर ही हैं। गांव पहुंचने पर क्या हाल होगा। उन्होंने सोचा, कोई उपाय करना चाहिए।

गांव के सिवान पर ईख के खेत थे। फसल लहलहा रही थी। गोनू ने एक रास्ता निकाला। दोनों

बैलों को लेकर ईख के खेत में घुसे। वहां दोनों को बांध दिया। खुद निकल आए और वहां से दौड़ते-भागते गांव पहुंचे। रास्ते भर लोग उन्हें इस हाल में देखकर चौंक जाते। वे हल्ला करते जा रहे थे—बाघ को पकड़ लिया। बाघ को पकड़ लिया!!

चारों ओर खबर फैल गई कि गोनू झा ने बाघ पकड़ा है। सैकड़ों लोग जमा हो गए। जो सुनता दौड़ पड़ता। कुछ लोगों ने शक भी किया कि गोनू मजाक कर रहा है। लेकिन उनकी हालत और घबराहट देखकर सबको यकीन करना पड़ा।

गोनू लोगों से बोले—बाघ को मैंने जैसे-तैसे बांध तो दिया है, लेकिन उसे मारने के लिए सबका चलना जरूरी है। सभी लोग मेरे पीछे-पीछे आइए।

सबको लेकर गोनू ईख के खेत के पास आए। गांव के लोग एक-से-एक हथियार लेकर आए थे। किसी के हाथ में भाला, किसी के हाथ में तलवार, लाठी, फरसा, कुदाल, कुछ न मिला तो हंसिया ही। लोगों ने ईख के खेत को घेर लिया।

गोनू झा खेत के अंदर घुसे। थोड़ी देर के बाद दोनों बैलों को लेकर वे बाहर निकले। यह देखकर गांव के

लोगों को बहुत गुस्सा आया।

एक आदमी ने पूछा—क्यों गोनू, यही है आपका बाघ?

गोनू बोले—भाइयो, सभी लोग कान खोलकर सुन लीजिए। लोगों के सवालों से परेशान होकर मुझे ऐसा करना पड़ा। ये दोनों बैल हैं। हाट में जाकर आज ही इन दोनों को मैंने पचास रुपए देकर खरीदा है। बैल के बारे में किसी को और कुछ पूछना हो तो अभी पूछ लें। आगे के लिए खबरदार! बैल के बारे में कोई मुझसे बात न करे।

लोग हंसने लगे। गोनू झा की चतुराई बखानते गांव लौटे।

गोनू झा की चतुराई की चारों ओर प्रशंसा हो रही थी। राजदरबार में भी उनकी अच्छी पहुंच थी।

गांव का जमींदार उनकी इस उन्नति से जलता था। एक दिन जमींदार को मौका मिल गया। गोनू झा की भैंस जमींदार के खेत में घुस गई। जमींदार तो घात लगाए बैठा था। उसने गोनू की भैंस मरवा दी।

गोनू को बड़ा दुःख हुआ। वे जमींदार से बदला लेने की तरकीब सोचने लगे।

मरी भैंस की खाल उतारकर वे घर ले आए। उसे धूप में अच्छी तरह सुखाया। लोगों को बड़ा अचरज हुआ। गोनू बोले—पश्चिम देश में खाल की अच्छी कीमत मिलती है। इसे बेचूंगा तो भैंस की कीमत वसूल हो जाएगी।

खाल सूखकर कड़ी हो गई। पीटने पर ढन-ढन की आवाज आने लगी। वे खाल लेकर पश्चिम की ओर विदा हुए।

गांव के बाहर, जंगल में एक विशाल पेड़ था। नीचे

चबूतरा बना था। गोनू जानते थे कि इस इलाके के चोर इसी जगह जमा होते हैं। और चोरी का धन बांटते हैं।

शाम ढलते ही गोनू खाल लेकर पेड़ पर चढ़ गए।

रात के दूसरे पहर में चोर वहां जमा होने लगे। उस दिन बहुत माल मिला था। गहने-जेवरात काफी थे। वे आपस में बंटवारा करने लगे। बंटवारे के समय उन चोरों में विवाद हो गया। सारे आपस में लड़ने लगे। एक चोर बोला—मेरे साथ बेईमानी करोगे तो तुम लोगों पर ढनढनौआ वज्र गिरेगा।

इतना सुनते ही गोनू ने ऊपर से खाल गिरा दी। बीच में अनेक टहनियां थीं। खाल उनसे टकराई। ढन-ढन की तीखी आवाज हुई। चोरों ने समझा कि वज्र गिरने ही वाला है। सारा माल छोड़-छाड़ कर वे जान बचाकर भागे।

गोनू नीचे उतरे। सारा माल-असबाब उन्होंने झट-पट समेटा और घर लौट गए। चारों ओर खबर फैल गई कि खाल बेचकर गोनू को बहुत धन मिला है। एक असर्फी जमींदार को भी भिजवाई। जमींदार से गोनू बोले—धन्य माई बाप! आपने मेरी भैंस

मरवाई, इसी से मैं अमीर बन गया। पश्चिम देश में खाल की काफी कीमत मिलती है।—लोभी जमींदार चकित हो उठा। उसने अपनी सारी भैंसें मरवा दी और बाद में पश्चाताप करते रहे।

रात हुई। गोनू के घर चोर आ गए। गोनू को पहले से अनुमान था कि चोर आएंगे। चोर उनके घर के पिछवाड़े बैठकर आहट ले रहे थे। गोनू जगे हुए थे। उन्हें भी चोरों की आहट मिल गई थी।

गोनू ने अपनी पत्नी से ऊंची आवाज में कहा—अजी, सुनती हो! चोरों का बड़ा आतंक है। तुमने किसी को बताया नहीं न कि सब धन हमने कुएं में छिपा रख है। कुआं काफी गहरा है! उसका सारा पानी निकले बिना धन किसी के हाथ न लगेगा। किसी को बताना नहीं।

पत्नी की समझ में तो कुछ न आया। लेकिन चोर सब समझ गए। सब कुएं पर पहुंचे। कुछ और मददगारों को पकड़ लाए। रात भर पानी निकालते रहे। धन तो न मिलना था न मिला।

सुबह गोनू झा कुएं पर पहुंचे। कुएं के चारों ओर गोनू का ही खेत था। उसमें सिंचाई की जरूरत थी।

सिंचाई हो गई। लोगों को सुनाकर वे कहने लगे—वाह भाई चोर! बिना मजूरी के खेत सिंचाई कर दी। धन्यवाद भाई!!

कुछ दिन बाद का वाकया है। गोनू की बूढ़ी मां चल बसीं। मिथिला में श्राद्ध का भोज बड़ा नामी है। लोग घर-बार बेचकर भोज करने में लुटा देते हैं। यह रिवाज आज भी है। गोनू के जमाने में तो और भी ज्यादा था।

गांव के लोग कहने लगे—आप अमीर आदमी हैं गोनू झा! आपकी मां भाग्यशाली थीं। उनका शानदार भोज कीजिए। जो कोई न कर सका, वैसा कीजिए।

गोनू को यह रिवाज फालतू लगता था। वे इस नियम को तोड़ना चाहते थे। कुछ तरकीब लगाना चाहते थे।

वे लोगों से बोले—आप लोग ठीक कहते हैं। आप सब जैसा कहेंगे, वैसा ही करूंगा। सबने कहा कि मिठाइयों का भोज होना चाहिए। गोनू ने सहमति दी।

भोज का दिन आया। टोले-मुहल्ले से लेकर

गांव-जबार तक के लोगों को न्यौता दिया गया।

खाने वाले जुट गए। सबको बिठाया गया। पत्तल परोसी गई। पानी परोसा गया। फिर काफी देर तक कुछ न आया। लोग कहने लगे—अब भोजन-सामग्री परोसी जाए।

गोनू ने इशारा किया। परोसना चालू हुआ। सबकी पत्तल पर ईख के चार-चार छोटे टुकड़े डाल दिए गए।

ईख का टुकड़ा देखकर लोग मुस्कराए। एक आदमी बोला—गोनू तो कलाकार आदमी है। उनका भोज तो कुछ अलग होगा ही। अब आगे-आगे देखिए, क्या सब आता है!

लेकिन, आगे न कुछ आना था, न आया। लोग हल्ला करने लगे—भई, बहुत देर हो रही है। भोजन की और सामग्री जल्दी मंगवाइए!

गोनू झा सामने आए। बोले—कौन-सी सामग्री और? अब कोई सामग्री आने वाली नहीं है। आप लोग भोजन करें। जितना ईख आप लोग खा सकें, खिलाऊंगा।

एक बूढ़े बाबा बिगड़ गए। गुस्से से भरकर बोले—गोनू झा! तुम हम लोगों को बेवकूफ बना रहे

हो? यही तुम्हारी मिठाइयों का भोज है?

गोनू बोले–बाबा! बेवकूफ भी कोई बनाने की चीज है। बची भोज की बात! आप सब जानते हैं–सभी मिठाइयों की जड़ ईख है। वही ईख मैं खिला

रहा हूं। इसी से सारी मिठाइयों का मजा मिल जाएगा।

अब ईख खाने के अलावा लोगों के पास कोई चारा न था। सबने वही खाया।



इंडिया इन्टरनेशनल प्रैस, ए-12/1 नारायणा इन्डस्ट्रीयल एरिया फेस-I, द्वारा मुद्रित